अंक – 31 । जनवरी – जून 2015

अजामुख

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

अन्तर्राष्ट्रीय मानक गुणवत्ता प्रमाणपत्र (आई.एस.ओ. 9001: 2008)

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम को आई.एस.ओ. 9001: 2008 से प्रमाणित किया गया ताकि बकरी उत्पादकता को अनुसंधान, प्रसार एवं मानव संसाधन विकास को प्रोत्साहित कर समाज, उद्योग एवं वैज्ञानिक समुदाय को लाभ प्रदान किया जा सके।

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:
डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक
डा. गोपाल दास
डा. अनु राहल
डा. नितिका शर्मा
डा. विजय कुमार
डा. हरिऔध तिवारी

टंकक
जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित
http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

बकरी पालन आजीविका सुरक्षा का एक सशक्त माध्यम है। हमारे देश में 13.5 करोड़ बकरियाँ हैं । बकरी पालन व्यवसाय से करीब 7 करोड़ किसान जुड़े हुए हैं। वर्ष 2002 से 2011 के मध्य बकरियों के मांस उत्पादन में 0.47 से 0.59 मिलियन मैट्रिक टन की वृद्धि हुई। इसी क्रम में बकरियों द्वारा उत्पादित दूध उत्पादन में भी 2.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। हमारा देश बकरी के दूध उत्पादन के लिए विश्व में प्रथम स्थान रखता है जबकि मांस उत्पादन में इसका दूसरा स्थान है । बकरी के दूध एवं मांस का उत्पादन सम्पूर्ण विश्व के उत्पादन का क्रमश: 29 एवं 12 प्रतिशत है। मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से बकरी के दूध एवं मांस की बहुत उपयोगिता है, अत: इसकी दिन प्रतिदिन मांग भी बढ़ रही है। बकरी का दूध प्राकृतिक रूप से एक समांगीकृत एवं सुरक्षित उत्पाद है। बकरी का दूध मानव के प्रतिरोधी तंत्र को नियंत्रित करता है। इस दूध में सेलेनियम लवण की अच्छी मात्रा पाई जाती है जो कि मानव रक्षा तंत्र को नियन्त्रित करता है। बकरी का दूध अन्य पशुओं के दूध की तुलना में अधिक सुपाच्य है । बकरी का दुध विशेषकर छोटे बच्चों, रोगी एवं बूढ़े लोगों के लिए बहुत ही गुणकारी है। बकरी के मांस में अधिक मात्रा में पोलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड पाया जाता है जो कि हृदय सम्बन्धी रोगों को भी कम करने में सहायक है। बकरी के दूध से बने श्रृंगार प्रसाधन जैसे साबुन एवं क्रीम इत्यादि की भी लोकप्रियता बढ़ रही है। बकरी पालन लोकप्रिय बनने से इसकी औद्योगिकरण की बहुत सम्भावना है । केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम इस दिशा में निरंतर सार्थक प्रयत्न कर रहा है, जिससे बकरी पालन को व्यवसायीकरण की ओर उन्मुख किया जा सके। इसके अन्तर्गत संस्थान के द्वारा किसानों, नवयुवकों, पशु चिकित्सकों इत्यादि को समयबद्ध तरीके से प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसमें बकरी पालन से सम्बन्धित आधुनिक तकनीकों एवं प्रबन्धन को विशेष रूप से रेखाकिंत किया जाता है।

बकरियों देश की सभी जलवायु क्षेत्रों में पाली जाती हैं। इसका मुख्य कारण है अनुकूलीनता, बकरी की अधिकांश नस्लें कठिन जलवायु में प्रवास तथा कटिबंधीय बीमारियों, अल्प पोषण व पानी की कमी जैसी विषम परिस्थितियों के लिए पूर्णतया अनुकूलित हैं।

संक्रामक रोगों के कारण बकरियों की मृत्यु दर एवं रूग्णता दर को कम करना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसके लिए व्यापक रूप से बकरियों का टीकाकरण, अन्य बचाव के तरीके एवं उपचार अति आवश्यक है।

इस अर्थवर्ष में अनेक संस्थान में विशिष्ट अतिथि गणों का आगमन हुआ इसमें डा. एस. अयप्पन, महानिदेशक, भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली एवं सचिव डेयर, डा. के.एम.एल. पाठक, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), ए.के. सिक्का, उप महानिदेशक (एन आरएम), डा. एन.के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी) तथा माननीय राज्य मंत्री भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह प्रमुख थे। सभी विशिष्टगणों ने संस्थान का भ्रमण किया तथा संस्थान की प्रगति को सराहा। संस्थान में बकरी पालन पर कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान को कार्यों की गुणवत्ता के आधार पर आईएसओ 9001–2008 प्रमाण पत्र भी इस दौरान हासिल हुआ है। मैं आई एस ओ प्रमाण पत्र हेतु संलग्न समिति के सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ।

मैं हिन्दी सम्पादन मण्डल के सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिनके सार्थक प्रयासों से यह मुखपत्र प्रकाशित हो सका, आशा करता हूँ कि इसमें प्रकाशित हुई सूचनाऐं वैज्ञानिकों, नीति निर्धारकों, अकादिमकों, नवउद्यमियों एवं किसानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगीं।

एस.के. अग्रवाल
निदेशक

दुधारू बकरियों में औषधियों का उचित प्रयोग

अनु राहल, नीतिका शर्मा एवं अशोक कुमार

औषधियों का प्रयोग पशु के रोगों की रोकथाम एवं उपचार के लिए किया जाता है। आवश्यकता के अनुसार तथा नित हो रहे प्रयोगों के आधार पर नई औषधियों का उपयोग आज के समय में सामान्य बात है । परन्तु पुरानी उपलब्ध औषधियों तथा नई औषधियों का प्रयोग करते हुए संयमित रहना नितान्त आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में उपलब्ध लगभग सभी औषधियों का बहुतायत में, असन्तुलित अथवा निर्धारित मात्राओं पर अनुचित समय अन्तराल पर प्रयोग करना नुकसानदायक हो सकता है ।

औषधियों का चयन करते समय इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान रखना आवश्यक है– बकरी की उम्र व लिंग, रोग का प्रकार, रोग की अवस्था, भौतिक अवस्था जैसे गर्भावस्था, बकरी की उत्पादकता, औषधि की उपलब्धता, औषधि की प्रकार, औषधि के दुष्प्रभाव, औषधि की शरीर से उत्सर्जन की प्रक्रिया ।

औषधि का चयन करते समय उसके विषय में भी जानकारी होना आवश्यक है । इसमें अनेक बिन्दु महत्वपूर्ण है जैसे– औषधि की लगाए जाने की दर, औषधि की कुल मात्रा, औषधि लगाने का माध्यम/तरीका, औषधि लगाने का अंतराल, औषधि लगाने की कुल समयावधि, औषधि की रक्त में उपलब्धता, औषधि का प्रभावित अंगों पर प्रभावकारिता, आदि ।

उपरोक्त के अतिरिक्त सभी औषधियों के दुष्प्रभावों की जानकारी प्रचुर मात्रा में नितान्त आवश्यक है, क्योंकि औषधि शरीर में प्रवेश करने के बाद विभिन्न अंगों में उसकी उपलब्धता उस पर शरीर में होने वाली प्रक्रिया पर निर्भर करती है । इसी के आधार पर रक्त में उसकी न्यूनतम मात्रा व कीटाणुओं के विरूद्ध न्यूनतम उपलब्धता पर भी निर्भर करती है । इसके साथ ही साथ यह भी जानकारी होने चाहिए कि वह कब और कितनी मात्रा में किस उत्सर्जन (दूध, मल, मूत्र, पसीन, इत्यादित) के माध्यम से उत्सर्जित होगी ।

अनेक बार औषधियों के दुष्प्रभाव की जानकारी के अभाव में भी बकरी पालक औषधियों का अनुचित प्रयोग कर लेते है । उदाहरण के तौर पर –

1. सल्फाडाइमिथाँक्सिन नामक सल्फा एन्टीबॉयटिक का प्रयोग बकरी में उनकी शारीरिक विकास दर में वृद्धि करने के लिए तथा विभिन्न व्याधियों उपचार के लिए किया जाता है । परन्तु इसकी अधिकता सदा हानिकारक होती है, तथा यह औषधि बकरी की खाल में संचित हो जाती है । इसकी अल्प मात्रा दूध में भी उत्सर्जित होती है । इस प्रकार की औषधि की दूध में उपस्थिति मानव जाति के लिए हानिकारण सिद्ध होती है, क्योंकि औषधि की उपस्थिति एलर्जी, कैंसर तथा औषधि प्रतिरोधकता उत्पन्न करती है ।
2. एम्पीसिलिन नामक एन्टीवॉयटिक का सामान्य रूप में प्रयोग श्वसन व पाचन तंत्र के रोगों के उपचार के लिए किया जाता है, परन्तु अधिकता में उपयोग करने पर अल्सर, आँतों व पेट के कैंसर की सम्भावना बढ़ जाती है । यह औषधि भी दूध, मल व मूत्र के साथ शरीर से बाहर आती है ।
3. फ्लूनिक्सिन नामक औषधि का प्रयोग दर्द, बुखार तथा सूजन में लाभ प्राप्त करने के लिए किया जाता है, परन्तु इसकी अधिकता नुकसानदायक होती है ।

उपरोक्त के अतिरिक्त यह विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि दुग्ध उत्पादन के लिए प्रयुक्त होने वाली कौन–कौन सी औषधियों का दूध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।

उन्नत बकरी पालन के आवश्यक प्रजनन प्रबंधन

डा. मनोज कुमार सिंह, डिगे महेश शिवानंद, निकिता शर्मा, विनय चतुर्वेदी एवं भुवनेश्वर राय

घटते प्राकृतिक संसाधन, कृषि जोत एवं कृषि उत्पादकता तथा बढ़ते आर्थिक दबाव एवं वातावरण में हो रहे प्रतिकूल परिवर्तन के कारण ग्रामीणों का रोजगार के लिये शहरों की ओर भारी संख्या में पलायन हो रहा है। उपरोक्त परिस्थितियों में बकरी पालन भूमिहीन कृषि श्रमिक, छोटे सीमांत किसान तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के साथ-साथ छोटे उद्यमियों एवं प्रगतिशील किसानों के लिये महत्वपूर्ण विकल्प है, चूंकि बकरी पालन स्थानीय संसाधनों, कम लागत, कम जोखिम एवं तुरन्त आय प्रदान करता है। बकरी पालन को गरीब महिलाओं एवं बुजर्गों द्वारा भी सहजता से किया जा सकता है। परिवार के लिये उत्तम पौष्टिक आहार के रूप में दूध भी उपलब्ध होता है। उन्नत प्रबंधन द्वारा प्रति वयस्क बकरी द्वारा शुद्ध आय रूपया 6000-10000 प्रति वर्ष प्राप्त की जा सकती है। प्रजनन प्रबंधन को उपयोगिता को ध्यान में रखकर इससे होने वाले लाभों पर इस लेख में विस्तृत रूप से समझाया गया है।

बीजू बकरे का चुनाव

1. प्रजनक बकरे की नस्ल का चुनाव उसकी उत्पादकता के साथ-साथ क्षेत्र विशेष की अनुकूलता को ध्यान में रख कर करें।
2. नर शुद्ध नस्ल का हो एव शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं चुस्त हो तथा अंडकोश विकसित एवं समान आकार के हों।
3. नर जुड़वा के रूप में पैदा हुआ हो तथा आहार को शरीर भार में परिवर्तित करने की अधिकतम क्षमता हो।
4. नर बच्चे का प्रजनक बकरे के रूप में 6- 9 माह की उम्र पर चुनाव करना सर्वाधिक उपयुक्त होता है।
5. बीजू बकरे में अपने गुणों को अपनी संतति में छोड़ने की अधिकाधिक क्षमता हो। मिलन कराने पर अधिकतम बकरियों को गर्भित करता हो।
6. स्वेच्छाहार (फीडलाट),पद्धति से पाले गये नरों को प्रजनक के रूप में चुनाव न करें क्योंकि अत्याधिक शरीर भार वाले बकरों की प्रजनक क्षमता कम बोकी गई है ।
7. नर रोग ग्रसित एवं संक्रमित रोग का वाहक न हो। गलियों में इधर-उधर घूमने वाले एवं अवर्गीकृत बकरों को कदापि प्रजनन के लिए उपयोग में न लायें।

बकरों का प्रजनन प्रबंधन

प्रजनक नरों को पर्याप्त उर्जायुक्त राशन देना चाहिए। चूँकि निम्न स्तरीय पोषण से अनुवर्रता हो जाती है। बयस्क प्रजनक नरों को प्रजनन काल में 500-700 ग्राम एवं सामान्य समय में 200-250 ग्राम दाना तथा स्वेच्छानुसार हरा चारा एवं भूसा देना चाहिए। प्रजनक बकरों को पर्याप्त व्यायाम भी कराना चाहिए जिससे वह मोटे, आलसी एवं निस्प्रभावी न हो जायें। जो बकरा बकरियों को गर्भित करने में असमर्थ हो तथा अपने लक्षणों को संतति तक ठीक से पहुंचाने में असक्षम हो उसको शीघ्र अतिशीघ्र बेच देना चाहिए। लगभग 40-50 बकरियों पर एक प्रजनक बकरा उपयुक्त रहता है। यदि रेबढ़ नया स्थापित किया जा रहा है तो आरम्भ के दो से तीन वर्षों में 10 बकरियों के लिए एक प्रजननक बकरा रखना चाहिए। दो या अधिक बकरों की आवश्यकता होने पर वे असंबन्धी होने चाहिए जिससे रेबढ़ में अधिकतम आनुवंशिक विविधता बनायी रखी जा सके। वर्ष में एक बार प्रजनक बकरे का ब्रूसलोसिस बीमारी का परीक्षण अवश्य कराना चाहिए यदि बकरा ब्रुसैला रोग से ग्रसित है तो उसे रेबढ़ से निकाल देना चाहिए। बरसात से पूर्ण एवं बरसात के बाद अन्त:परीजिवियों को मारने के लिए अन्त: परजीवी नाशक दवा पीलानी या खिलानी चाहिए साथ ही पी.पी.आर., एफ.एम.डी., एस.एस. व गोट पोक्स नामक बीमारियों से बचाव का टीकाकरण करा लेना चाहिए। एक दिन में एक प्रजनक बकरे से 2-3 बकरियों को ग्याभिन कराना चाहिए। बकरी पालकों के रेबड़ों में अन्त:प्रजनन एक गंभीर समस्या है जिसका प्रमुख कारण एक ही प्रजनक बकरे को 4-5 वर्ष तक उसी रेबड़ में उपयोग में लाना तथा अपने ही रेबड़ के नर मेमने को प्रजनक बकरे के रूप में चयनित करना है। अत: प्रजनक बकरे को एक से डेढ़ वर्ष बाद बदल देवें एवं किसी अन्य रेबड़ (असम्बन्धी) से प्रजनक बकरे का चुनाव करें ताकि अन्त:प्रजनन को नियंत्रित किया जा सके।

बकरियों का प्रजनन प्रबंधन :

1. प्रत्येक दिन सुबह के समय नियमित रूप से मादाओं के गरमी में आने की पहचान करावें।
2. हमेशा शुद्ध नस्ल के एवं उच्च गुणवत्ता वाले बकरे से गर्भित करावें।
3. प्रथमवार बकरियों को गर्भित कराते समय मध्यम आकार जैसे कि बरबरी, सुरती, उस्मानावादी बकरी का शरीर भार 16 कि.ग्रा. या अधिक होना चाहिए एवं बड़े आकार वाली बकरी जैसे जमुनापारी, बीटल, जखराना व सिरोही का शरीर भार 20 कि.ग्रा. एवं आयु 12 माह होनी चाहिए। छोटे आकार वाली बकरी जैसे : ब्लैक बंगाल का शरीर भार 8–10 कि.ग्रा. होना चाहिए।
4. यौवनारंभ में समुचित पोषण का ध्यान रखें इस अवस्था में कुपोषण का विपरीत प्रभाव वयस्क पशुओं की अपेक्षा अधिक पड़ता है।
5. गर्मी में मादाओं के आने पर 10 –12 घन्टे बाद नर से मिलन करायें ऐसा करने से गर्भधारण की अधिक संभावना बनी रहेगी।
6. कुछ बकरियाँ यौवनारंभ आते ही, बिना परिपक्व हुए मद में आ जाती हैं ऐसी बकरियों को परिपक्व अवस्था में आने तक प्रजनन नहीं कराना चाहिए।
7. किन्ही कारणवश बकरी यदि कम उम्र में एवं कम शरीर भार पर गर्भित हो जाती है तो, उन्हें गर्भधारण करने से बयस्क होने तक ही नहीं बल्कि ब्याने के बाद 90 दिन तक 300 ग्राम अतिरिक्त दाना मिश्रण, पर्याप्त हरा चारा, भूसा तथा उचित मात्रा में नमक, खड़िया आदि देते रहना चाहिए।
8. वातावरण एवं खाद्य सामग्री को ध्यान में रखते हुये बकरियों को सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर एवं मई-जून में ग्याभिन करायें। उत्तर-मध्य भारत में बकरियों को ग्याभिन कराने का यह सबसे अच्छा समय है। बच्चे अक्टूबर-नवम्बर एवं फरवरी-मार्च में पैदा होंगे इससे बच्चों का जन्म उपयुक्त वातावरण में होगा। फलस्वरूप बच्चों की बढ़वार एवं जीवित रहने की दर अधिक रहेगी।
9. मिलन कराने के बाद भी यदि बकरी बार-बार ऋतु/गर्मी में आती है तो यह संक्रमण, हारमोन असंन्तुलन, कुपोषण, निषेचन में कमी आदि कारणों से हो सकता है, ऐसी बकरियों को रेबड़ में अधिक समय तक न रखें क्योकि यह खर्चीला होता है। कम प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता वाली (10–20 प्रतिशत) एवं रोग ग्रसित (10–15 प्रतिशत) मादाओं को प्रतिवर्ष निष्कासन करते रहना चाहिए।
10. गर्भित मादाओं को गर्भधारण के लगभग 100 दिन बाद 250 ग्राम से 300 ग्राम अतिरिक्त पूरक आहार न केवल बच्चा देने तक ही बल्कि 90 दिन तक दुग्धकाल के दौरान देना चाहिए।
11. बकरी के ब्यांने के लगभग एक सप्ताह पूर्व बकरियों को चराने के लिए जंगल में दूर न भेजें एवं उनके बाड़े में सूखी घास का विछावन करें। ऐसी अवस्था में बकरियों का खान-पान का प्रबंध फार्म या घर पर ही करें।
12. ब्यॉत शुरू होने से पहले ही ब्यांत घर की अच्छी तरह से साफ-सफाई करके उस जमींन पर बिना बुझा चूना छिड़क देना चाहिए एवं थोड़ी सी सूखी घास-फूस की विछावन कर देनी चाहिए जिससे जच्चा एवं बच्चा दोनों ही संक्रमण से सुरक्षित रहें।
13. बकरी के ब्याने के स्थान की बिछावन को प्रसव क्रिया पूरी हो जाने के बाद जेर को शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से उठा दें ताकि बकरी उसको खाने न पाये तथा कहीं दूर स्थान पर ले जाकर आग लगा दें या जमींन में गहरा गड्डा करके गाड़ दें।
14. नवजात बच्चों एवं बकरियों के बाड़े की साफ-सफाई का विशेष घ्यान रखें। बकरियों को ब्याने के आधा से एक घंटे के अन्दर पीने का पानी उपलब्ध कराकर भूसा, सूखा चारा तथा 150–200 ग्राम दाना दे देना चाहिए।
15. प्रसवोपरान्त कम से कम 50–60 दिन के बाद बकरी को प्रजनन करायें।
16. मादा बकरियों की 8–9 वर्ष के बाद जनन एवं उत्पादन क्षमता कम हो जाती है अत: इन्हें रेबड़ से हटा देना चाहिए।

प्रजनक बकरों का स्वास्थ्य प्रबन्धन

नितिका शर्मा, विनय चतुर्वेदी एवं एम.के. सिंह

प्राय: देखा गया है कि प्रजनक बकरों के स्वास्थ्य प्रबन्धन पर सबसे कम ध्यान दिया जाता है। प्रजनक बकरों का आक्रामक रवैया तथा उनसे आने वाली दुर्गंध इस चूक का कारण है। परन्तु स्वस्थ प्रजनक बकरे पशु समूह की प्रजनन क्षमता एवं उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं अत: प्रजनक बकरों के स्वास्थ्य प्रबन्धन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

- प्रजनन के समय प्रजननक बकरे स्वस्थ्य रहें इसके लिए आवश्यक है कि बकरों की नियमित रूप से डिवर्मिंग एवं टीकाकरण किया जाए। इसके अतिरिक्त प्रजनन से 4-6 सप्ताह पूर्व प्रजननक बकरों को 0.5 किलो अतिरिक्त दाना देना चाहिए एवं संक्रमित बकरे को समूह से निकाल देवा चाहिए।
- प्रजनन से एक माह पहले प्रजनक बकरों को संक्रामक रोगों जैसे ब्रुसेलोसिस की जाँच करनी चाहिए।
- प्रजनक बकरे आपस में लड़कर एक दूसरे को चोट पहुंचाते हैं अत: इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि एक उम्र व एक आकार के बकरे ही एक बाड़े में रखे जायें। छोटे आकार के बकरों को बड़े आकार के बकरों के साथ न रखें। बकरों के तीखे, टूटे तथा खण्डित सींगों को काट /निकाल देना चाहिए।
- प्रजनक बकरे प्रजनन काल में अपने मुँह व आगे की टांगों के पिछले हिस्से पर पेशाब/मूत्र विसर्जित करते हैं जिससे दुर्गन्ध आती है तथा त्वचा के रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है। अत: बकरों को नहला कर उन्हें साफ सुथरा रखना चाहिए। बकरों की टांगों व मुंह के बाल काट कर छोटे कर दें।
- प्रतिरोधक यूरोलिथिएसिस (पथरी) प्रजननक बकरों की प्रजनन क्षमता को घटा सकता है। अत: आवश्यक है कि प्रजनक बकरों के आहार में कैल्शियम फासफोरस का अनुपात 2:1 हो । पथरी की समस्या से बचाव हेतु बकरों को हमेशा साफ पीने का जल उपलब्ध कराऐं। बकरों के आहार में नमक भी मिलाऐं। पथरी होने पर बकरों के आहार में अमोनीयम क्लोराइड 0.5 -1 प्रतिशत तक मिलाऐं।
- प्रजनक बकरों के खुर साफ सुथरे तथा छोटे रखें। खुर की चोट का तुरन्त उपचार कराऐं।
- प्रजनक बकरों को 3-5 घंटे चराई के लिए छोड़ना चाहिए ताकि इनका समुचित व्यायाम हो सके ।

राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित त्रैमासिक बैठक

राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 27 फरवरी, 2015 को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इन बैठकों में संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, अनुभाग प्रभारी व संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। बैठकों के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किये गये कार्य कलापों पर गहन विचार-विमर्श किया गया तथा संस्थान निदेशक द्वारा समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को संस्थान के 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने हेतु निर्देशित किया गया तथा प्रशासनिक अधिकारी व प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रत्येक दशा में धारा 3(3) का अनुपालन करने के लिये निर्देशित किया गया। इसी दौरान राजभाषा अनुभाग को समस्त कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता व रूचि जागृत करने के उद्देश्य से हिन्दी में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिये कर्मचारियों को नियमानुसार नगद पुरस्कार प्रदान करने हेतु निर्देश जारी किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 10.03.2015 को चतुर्थ त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के दौरान प्रभारी, राजभाषा द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये अपने विचार प्रस्तुत किये।

खुर सडांध : बकरियों एवं भेड़ों में बरसात के मौसम में होने वाला एक घातक रोग

नितिका शर्मा, अनिल कुमार मिश्रा एवं अनु राहल

बरसात के समय आर्द्रता / नमी बनी रहती है। ऐसे में प्राय: देखा गया है कि खुर में सड़न होने लगती है पस पड़ जाती है। इसे खुरों की सड़न/खुर सडांध कहते हैं या अंग्रेजी में फुट रॉट कहते हैं। यह जीवाणु जनित रोग है। यह रोग डिक्लोबैक्टर नोडोसस या फूजोबैक्टीरयम नेकरोफोरम के संक्रमण के कारण होता है। यदि बाड़ा ठीक से साफ न हो और बाड़े में भीड़ हो तो इस रोग के होने की सम्भावना काफी बढ़ जाती है। भेड़ों में इस रोग का प्रकोप अधिक पाया गया है। कभी-कभी तो खुर सड़ कर निकल जाता है। सड़न बढ़ जान के कारण गैगरीन भी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे में पशु चल नहीं पाता, चर नहीं पाता और कमजोरी के कारण मर जाता है।

उपचार

खुरों में किसी भी प्रकार की चोट का तुरन्त उपचार करना चाहिए। पस हो तो उसे निकालना चाहिए। कई बार इन घावों में मक्खियों के अंड़े दे देती है तो कीड़े पड़ जाते हैं कीड़ों के लारवा निकालने के लिए तारपीन के तेल या नैगाशंट पाउडर का प्रयोग करें। फिनायल/मिटटी के तेल का प्रयोग घाव पर लगाने के लिए नहीं करना चाहिए। तारपीन का तेल लगाकर घाव को कुछ देर के लिए छोड़ दें। कीड़े या मक्खियों के लारवा घाव के ऊपर आ जायेंगे उन्हें चिमटी से निकालने तथा घाव पर जीवाणु नाशक दवाऐं जैसे विटाडीन /पोविडोन आयोडीन इत्यादि का प्रयोग करें। खुरों को धोने व साफ करने के लिए 10 प्रतिशत फारमिलिन/ 10-20 प्रतिशत जिन्क सल्फेट / 10 प्रतिशत कॉपर सल्फेट (नीला थोथा) का प्रयोग करें। कॉपर सल्फेट (नीला थोथा) जहरीला होता अत: इसका प्रयोग सावधानी से करें। जिन्क की कमी के कारण इस रोग के होने की सम्भावना काफी बढ़ जाती है। अत: 0.5 ग्राम जिन्क सल्फेट पशु /दिन 21 दिन तक खिलाना चाहिए जिससे जिंक की कमी दूर की जा सके। उपचार के लिए पेनिसिलिन-स्टेपटोमाइसिन / इराइथ्रोमाइसिन अेक्ससीटेटरासाइक्लीन एल ए/पनिसिलिन का प्रयोग कर सकते हैं। इनका इन्जेक्शन मांस में दिन में एक बार लगाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर उपचार की अवधि बढ़ाई जा सकती है।

बचाव

बाड़े में सफाई रखनी चाहिए। बाड़ा हवादार होना चाहिए। बाड़े में मूत्र व पानी के निकास की व्यवस्था होनी चाहिए। बाड़े में भीड़ नहीं होनी चाहिए। किलनी खुरों के बीच जख्म कर देती है तत्पश्चात इस रोग का संक्रमण देखा गया है इसलिए बकरियों व भेड़ों में किलनी नाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए। खुरों की सफाई पर ध्यान देना चाहिए। खुरों को काट कर छोटा व साफ रखना चाहिए।

सुझाव

जिन जानवरों के खुर सड़े हों उन्हें खरीदना नहीं चाहिए और ऐसे संक्रमणित पशुओं को अपने पशुओं से दूर रहना चाहिए ।

अन्तर्राष्ट्रीय मानक गुणवत्ता प्रमाणपत्र (आई.एस.ओ. 9001: 2008)

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम को इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मानक गुणवत्ता प्रमाणपत्र (आई.एस.ओ. 9001: 2008) प्रदान किया गया। यह प्रमाणपत्र प्रयोगशाला के कार्यो, पशु प्रबन्धन एंव प्रशासनिक प्रबन्धन में श्रेष्ठता के मानकों को ध्यान में रखते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय संस्था टी.यू.वी. नोर्ड, जर्मनी द्वारा दिया गया ।

कमजोर मानसून की स्थिति में बकरी पालन

बृजमोहन, ए.के. दीक्षित, खुश्याल सिंह, विजय कुमार, एस.सी.एल. गौतम, यू.सी. यादव, यू.बी. चौधरी, प्रभात त्रिपाठी, रवीन्द्र कुमार, अशोक कुमार

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा सन् 2015 में मानसून की कमजोर स्थिति (जैसे मानसून का देर से आना तथा बहुत कम प्रगति करना) में संस्थान द्वारा अंगीकृत गांवों के किसानों को बकरी पालन में सहायता प्रदान करने हेतु प्रसार गतिविधियां संचालित की गयीं। ये गतिविधियां जून 2015 में चलाई गई।

दिनांक 5 से 27 जून 2015 के मध्य में मथुरा जिले के अंगीकृत गांवों नगला चन्द्रभान, नगला अमरा, रावल व गिरधरपुर में कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा प्रक्षेत्र दिवस व स्थास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।

उक्त आयोजनों में 94 महिलाओं सहित कुल 204 कृषकों ने सहभागिता की तथा उक्त आयोजनों में निम्नलिखित क्रियाकलाप किए गए।

- कमजोर मानसून की स्थिति का सामना करने के लिए कृषकों को सचेत किया गया।
- पोषण के विकल्पों, चराना व चराने के समय पर परामर्श सेवायें प्रदान की गयी।
- उपलब्ध पानी के सही उपयोग व वर्षा जल संरक्षण पर परामर्श दी गई।
- बकरी तथा भेड़ों के लिए स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया तथा विभिन्न व्याधियों का उपचार किया गया।
- बकरियों के अच्छे स्वास्थ्य व उत्पादन के लिए 73 बकरी पालकों को मिनरल मिक्चर बांटा गया।
- कमजोर मानसून के कारण बकरियों की मजबूरी में बिकवाली से कृषक को बचाने के लिए उपाय सुझाये गए।
- उन्नत बकरी पालन, स्वास्थ्य पोषण और विभिन्न परिस्थितियों प्रबन्धन तकनीकियों तथा वार्षिक स्वास्थ्य सुरक्षा चक्र विषयों के छपे हुए साहित्य का बकरी पालकों को वितरण किया गया।

इन्हीं गतिविधियों में कमजोर मानसून की विविध चार स्थितियों जैसे मानसून का देर से आना, समय से आना परन्तु शीघ्र चले जाना, मानसून के बीच में अधिक अन्तराल का होना, शीघ्र आना तथा शीघ्र चले जाना की स्थिति में बकरी पालकों को बकरियों के पोषण प्रबन्धन तकनीकियों की पम्फलेट वितरण कर जानकारी प्रदान की गई। चारे की कमी की स्थिति में दाने की मात्रा बढ़ाये जाने पर मुख्य फोकस रहा।

अल्प मानसुन की स्थिति में बकरी पालन भा.कृ.अ.प.–के.ब.अ.सं., मखदूम ने कमजोर मानसून–2015 की स्थिति से निपटने के लिए अपनाए गए गांवों में विस्तार गतिविधियों जून 2015 में शुरू की है इसके अन्तर्गत कृषक वैज्ञानिक वार्ता तथा स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन नगला चन्द्रभान, नगला अमरा, रावल व गिरधरपुर गांव में किया गया। इमसें 204 किसानों (94 महिलाओं) ने भाग लिया।

हिन्दी भाषा जीवित भाषा है जो लोग किसी परिमित सीमा के भीतर ही आबद्ध करना चाहते हैं वे मानो उसका उपचय उसकी कलेवर वृद्धि नहीं चाहते। जीवित भाषाओं के विषय में इस प्रकार की चेष्टा, बहुत प्रयास करने पर भी सफल नहीं हो सकती ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

पुरस्कार एवं सम्मान

- डा. एस. के. अग्रवाल, निदेशक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम को बायोवेटु एग्री इनोवेशन पुरस्कार–2015 से बायोवेट अनुसंधान कृषि एवं तकनीकी संस्थान, इलाहाबाद द्वारा 21 फरवरी, 2015 को सम्मानित किया गया।
- डा. आर. बी. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक , एन.एफ.आर. एण्ड पी.टी. विभाग को आई. एस.जी.वी.आर.डी. फैलोशिप – 2015 से आई.एस.जी.वी.आर.डी. द्वारा वनस्थली विद्यापीठ में 18–20 फरवरी, 2015 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्मानित किया गया।
- संस्थान के डा. एम. के. त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, एन.एफ.आर. एण्ड पी.टी. विभाग को फैलो एनीमल न्यूट्रेशन एशोसिएशन आफ इण्डिया – 2013–14 के सम्मान से एना कान्फ्रेंस 2015, ए.ए.यू. वैटनरी कॉलेज, खानपारा, गुवाहटी, असम के दौरान 22 जनवरी, 2015 को सम्मनित किया गया।
- डा. एम.के. त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, एन.एफ.आर. एण्ड पी.टी. विभाग को आस्ट्रेलियन हाई कमीशन टू इण्डिया द्वारा एण्डेवर अवार्ड अम्वेस्डर सम्मान से 18 फरवरी 2015 को नई दिल्ली में एलूमनी ऑफ आस्ट्रियन अवार्डीज के समारोह के दौरान सम्मानित किया गया।
- डा. (श्रीमती) चेतना गंगवार, वैज्ञानिक, पी.आर. एण्ड एस.एम विभाग ने मेले में ‘साइन्टिफिक नॉलेज डिसेमीनेशन के दौरान दुवासु, मथुरा में 19–21 फरवरी 2015 को प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

वर्षा आधारित शहतूत युक्त वन चरागाह का प्रबन्धन

प्रभात त्रिपाठी, मनोज त्रिपाठी, यू.बी. चौधरी एवं रवीन्द्र कुमार

सामान्यत: बीहड़ भूमि सिंचाई के साधनों के अभाव में कृषिगत उपयोग में नहीं आ पाती है। परन्तु इन भूमियों का समतलीकरण करके उपयोग वर्षा आधारित वन चरागाह विकसित करने में किया जा सकता है। इन भूमियों पर समतली करण के उपरान्त शहतूत की नर्सरी में तैयार पौध को 5–5 मीटर की दूरी पर बरसात के दिनों में लगाया जा सकता है। प्रक्षेत्र पर शहतूत के पौधे भली प्रकार स्थापित होने के बाद द्वितीय वर्ष में शहतूत की पंक्तियों के मध्य खाली स्थान की हैरो/कल्टीवेटर की सहायता से हल्की जुताई करने के उपरान्त अंजन घास (सेंकरस सिलिएरिस/सेंकरस सेटीजेरस) छिटकवाँ विधि द्वारा 4–6 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेअर की दर से बो देना चाहिए तथा बहुत ही हल्का पाटा लगा देना चाहिए। वर्षा होने पर बीज का अंकुरण होने लगता है। अर्ध शुष्क स्थानों पर बुबाई के प्रथम वर्ष यदि बारिश कम होती है (300 मि.मी.) तो बढवार प्रभावित होती है तथा प्रथम वर्ष बहुत ज्यादा चारा नहीं मिल पाता है। अत: ऐसी अवस्था में बकरियों को चरने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। अपितु बुबाई के द्वितीय वर्ष से इस प्रकार से स्थापित वन चरागाह में बकरियों को चरने के लिए छोड़ा जा सकता है।

संस्थान में स्थापित शहतूत युक्त वन चरागाह

भारतीय पशु पोषण सोसायटी की एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला

भारतीय पशु पोषण सोसायटी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर 1 जून, 2015 को बकरी के लिए पालन पोषण रणनीतियां: जलवायु अनुरूप पोषण और गरीबी का उन्मूलन विषय पर एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

देश के विभिन्न भागों से वैज्ञानिक, कृषकों और छात्रों ने इन कार्यशाला में भाग लिया। डा. सी.एस. प्रसाद, पूर्व सहायक महानिदेशक (पशु विज्ञान), पूर्व कुलपति, महाराष्ट्र एनीमल एण्ड फिशरीज, महाराष्ट्र, पूर्व निदेशक भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, डा. एस.एस. कुन्डु, ए.एन.एम.आई, पशु पोषण सोसायटी के अध्यक्ष और डा. एस. के. अग्रवाल, निदेशक के.ब.अ.सं., मखदूम ने इस अवसर की शोभा बढाई। बकरी किसानों की समस्याओं के निदान के लिए एक विशेष किसान–वैज्ञानिक इंटरफेस सत्र डा. त्रिभुवन शर्मा, प्रोफेसर एवं निदेशक एक्सटेंशन, राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस सत्र में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव पर सहमति जैसे – कृमिनाशन प्रतिरोधकर्ता से निजात पाने के लिए स्थूल व सूक्ष्म पोषक तत्वों की उच्च पूरकता से सम्भव है। पादप जनित माध्यमिक मेटाबोलाइट के उपयोग के लिए गहन और अर्द्ध गहन बकरी पालन प्रणाली के लिए निर्देश तैयार कराने चाहिए। इन निर्देशों को बनाते समय देशभर में जलवायु परिस्थितियों पर भी विचार संतुलन, सिल्वी चारागाह प्रणाली के साथ–साथ मौसमी बायोमास के संरक्षण के विकास पर भी जोर देना होगा। वर्तमान जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में प्रतिरोधक क्षमता को अधिकतम करने के लिए गए सूक्ष्म पोषकों व पूरकता का पता लगाना आवश्यक है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फीड के साथ ध्यान केन्द्रित मिश्रण तैयार करें। बच्चों को शारीरिक वजन और विकास दर के आधार पर 100–300 ग्राम फीड प्रतिदिन देना चाहिए। चारा और स्थानीय पेड़ों के पत्तों का बकरी के फीड में उपयोग करने से आर्थिक लाभ भी लिया जा सकता है। बरसात के मौसम में व सूखे के दौरान उपयोग करने हेतु पेड़ के पत्तों व पुआल के संरक्षण के लिए बेहतर योजना अपनाई जानी चाहिए। किसानों को सम्पूर्ण संतुलित राशन पैकेट के रूप में वैज्ञानिक तकनीकों के प्रभावी और कुशल संचार की आवश्यकता है।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

प्रदर्शनी, किसान मेला एवं तकनीकी प्रदर्शन में सहभागिता

- ए.एस.सी. इण्डिया एक्सपो–2015 3–6 फरवरी, 2015 राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा में भाग लिया।
- बृहद पशुधन एवं कृषि मेला–2015 राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा में भाग लिया
- पूर्वी क्षेत्रीय मेला एट सी.पी.आई.आई रीजनल सेन्टर, पटना, बिहार 19–21 फरवरी, 2015 में भाग लिया।
- 21वें सरसों विज्ञान मेला एवं प्रदर्शनी में सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर 24–26 फरवरी, 2015 में सहभागिता की।
- किसान ज्ञान गंगा मेला में प्रगति मैदान, नई दिल्ली 26–28 फरवरी, 2015 में भाग लिया।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

- उत्तर क्षेत्रीय आंचलिक कृषि मेला प्रसार, कृषि निदेशालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आई.वी. आर.आई, इज्जतनगर, बरेली 17–20 फरवरी, 2015 में भाग लिया।
- दिनांक 16.4.2015 भा.कृ.अ.प.–के. ब. अ. संस्थान की तकनीकी प्रदर्शन का आयोजन आदरणीय राज्य मंत्री, सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह, महानिदेशक भा.कृ.अनु.प. एवं उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) के संस्थान दौरे के अवसर पर किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

- दिनांक 3–12 फरवरी, 2015 (10दिन) 61 वाँ राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 14 प्रांतों के 62 सहभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- दिनांक 21–30 मई, 2015 (10 दिवसीय) 62वाँ राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें 12 प्रांतों के 75 सहभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

- वैज्ञानिक बकरी पालन पर 5 दिवसीय, आत्मा मधुवनी, बिहार द्वारा प्रायोजित बकरी प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 5–9 जनवरी, 2015 को आयोजित किया गया जिसमें 23 किसान व 2 महिला प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।
- भूमि संरक्षण अधिकारी, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हाथरस, उ.प्र. द्वारा प्रायोजित वैज्ञानिक बकरी पालन पर पांच दिवसीय आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 16–20 फरवरी, 2015 तक आयोजित किया गया।
- भूमि संरक्षण अधिकारी, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हाथरस, उ.प्र. द्वारा प्रायोजित वैज्ञानिक बकरी पालन पर पांच दिवसीय आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 23–27 फरवरी, 2015 तक आयोजित किया गया।
- भूमि संरक्षण अधिकारी, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, सम्भल स्थान बहजोई (उ.प्र.) द्वारा आयोजित वैज्ञानिक बकरी पालन पर पांच दिवसीय प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 09–13 मार्च, 2015 तक आयोजित किया गया।
- भूमि संरक्षण अधिकारी, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, फिरोजाबाद (उ.प्र.) द्वारा आयोजित वैज्ञानिक बकरी पालन पर पांच दिवसीय प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 17–21 मार्च, 2015 तक आयोजित किया गया।
- दिनांक 6–10 अप्रैल, 2015 सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रायोजित 5 दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वहाँ से 25 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।
- दिनांक 12–16 मई, 2015 सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रायोजित 5 दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वहाँ से 25 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

बकरी पालक जागरूकता अभियान

अखिल भारतीय बकरी सुधार समन्वित परियोजना के क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा कृषकों के लिए आयोजित वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण

अखिल भारतीय बकरी सुधार समन्वित परियोजना का कार्य देश के 18 स्थानों पर चल रहा है। इस परियोजना का एक आदेश सम्बन्धित हितधारकों की बकरी पालन क्षमता को बढ़ाना है। हाल में ही छः इकाईयों ने 18 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- मालावारी क्षेत्रीय इकाई, विश्वविद्यालय बकरी एवं भेड़ फार्म, मानूथी त्रिसूर ने केरल के 50 किसानों को 4 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रशिक्षित किया। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम 1–12 मार्च, 2015, 25–26 मार्च, 2015, 6–7 अप्रैल, 2015 तथा 17–18 जून, 2015 को आयोजित किए गए।

- उसमानावादी बकरी इकाई, फाल्टन ने एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 3–6 जून, 2015 तक किया जिसका विषय बकरियों में टीकाकरण, प्राथमिक चिकित्सा एवं आंकड़े एकत्रित करना था।

- वैज्ञानिक बकरी पालन के माध्यम से उत्पादकता और विपणन रणनीति में सुधार लाने के लिए एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। अखिल भारतीय समन्वित बकरी परियोजना की अण्डमान क्षेत्रीय बकरी इकाई, भा.कृ.अ.प.–सी.आई.ए.आर.आई. पोर्ट ब्लेयर के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें 173 प्रशिक्षणार्थियों ने सहभागिता की जिनमें 65 महिला भी शामिल थी। यह कार्यक्रम 31 जनवरी, 2015 को न्यू बिम्बलीटान, 3 फरवरी, 2015 को रांची बस्ती, 5 फरवरी, 2015 को सीपीघाट तथा 11 फरवरी, 2015 को कालीकट, दक्षिण अण्डमान में आयोजित की गई।

- दिनांक 9–13 मार्च, 2015 को वैज्ञानिक बकरी पालन के 5 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन अखिल भारतीय समन्वित परियोजना ब्लैक बंगाल इकाई, बी.ए.यू. रांची, झारखंड में किया गया। इसमें 24 कृषकों ने भाग लिया।

- स्वयं सहायता समूह के लिए 1–4 दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम असम पहाड़ी बकरी इकाई, ए.ए.यू. बरनीहाट पर अखिल भारतीय समन्वित परियोजना ब्लैक बंगाल इकाई द्वारा आयोजित किए गए। इसमें 168 कृषकों ने 10 मार्च, 2015, 10 अप्रैल, 21 अप्रैल, 28 अप्रैल तथा 6–9 जून, 2015 को आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया।

- अखिल भारतीय समन्वित परियोजना की ब्लैक बंगाल इकाई, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय का झारघम समूह, लुधसूली में बकरी पालन पर 3 एक दिवसीय प्रशिक्षण 7 फरवरी, 10 फरवरी तथा 22 मार्च को आयोजित किए गए। इसमें 264 कृषकों ने भाग लिया जो ज्यादातर अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित थे।

- दिनांक 4–8 मई, 2015 को अखिल भारतीय समन्वित परियोजना की सूरती क्षेत्रीय इकाई, नवसारी इकाई, गुजरात में वैज्ञानिक उपायों के माध्यम से लाभदायक बकरी पालन पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 11 कृषकों ने भाग लिया।

केन्द्रीय मंत्री ने बकरियों को सैजन खिलाने की सराहना की

श्री गिरिराज सिंह, राज्य मंत्री सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम ने 16 अप्रेल, 2015 को एस. अेंयप्पन, महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. व सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग के साथ संस्थान का दौरा किया।

उनके साथ में डा. के.एम. एल. पाठक, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) भी उपस्थित थे । सभी गणमान्य अतिथियों ने संस्थान के पशुधन परिसर का दौरा किया और वैज्ञानिकों से वार्ता की। डा. यू.बी. चौधरी, प्रधान वैज्ञानिक ने सहजन *(मोरिंगा)* खिलाए जाने वाले प्रयोग की प्रगति प्रस्तुत की। मंत्री जी ने सहजन के चारे में सम्मिलित होने पर पोषक तत्वों की संरचना और स्वास्थ्य बर्धक प्रभावों की सराहना की साथ ही उन्होंने देश में चारे की मांग और आपूर्ति के अन्तर को कम करने तथा लागत घटाने के लिए सैजन पर और अनुसंधान करने पर जोर दिया। महानिदेशक और उपमहानिदेशक ने भी मंत्री जी के विचारों से सहमति व्यक्त की और पशु उत्पादकता और लाभप्रदता में सुधार करन में *मोरिंगा* बायोपास उत्पादन और उपयोग की भूमिका की सराहना की ।

विशिष्ट आगन्तुक

- डा. एम.सी वार्ष्णेय, उपकुलपति, कामधेनु विश्वविद्यालय, आन्नद, गुजरात ने 19.2.2015 को संस्थान का दौरा किया।
- डा. यू. के. गर्ग, अधिष्ठाता, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, महू ने 14.03.2015 को संस्थान का दौरा किया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565–2763380, फैक्स न.: 0565–2763246
ई–मेलः director@cirg.res.in,
बेबसाइटः http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565–2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई–मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित